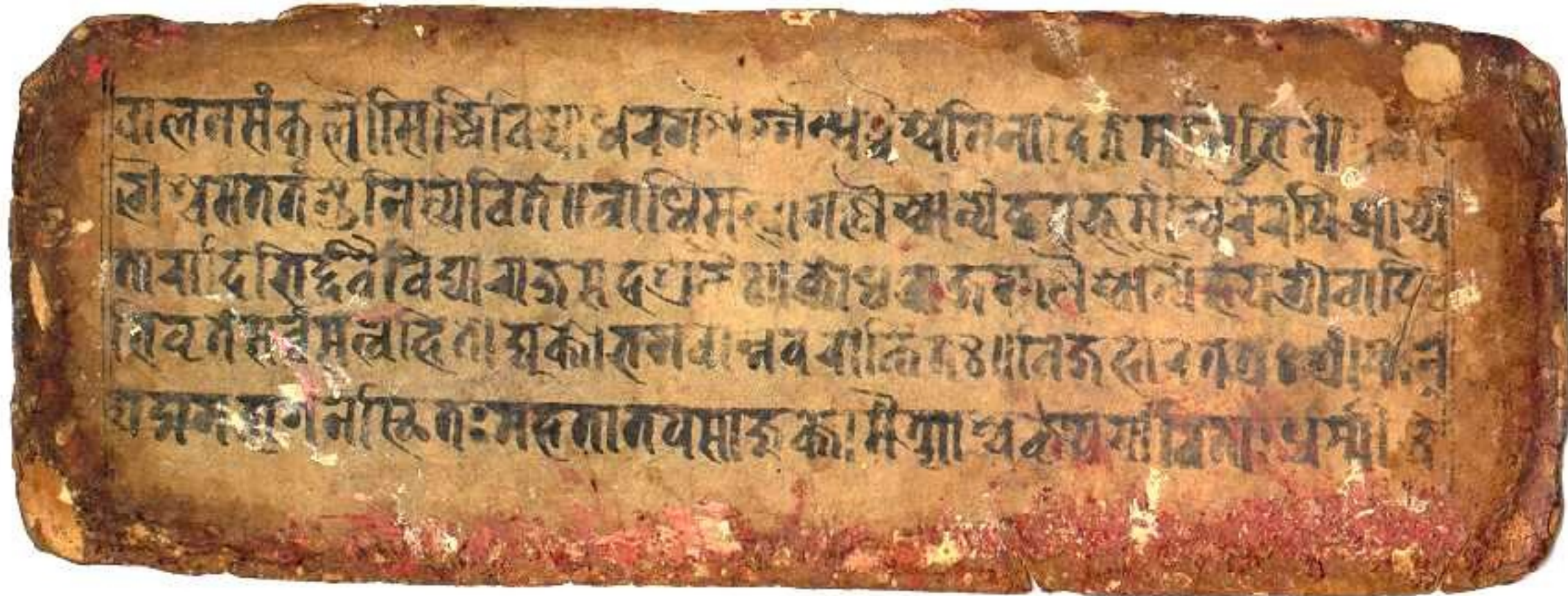


धर्मरत्न कञ्जाचार्य सुरत श्री महाबिहार

DM 150



दस तस्यैव मरु खंड वयसिदि तमायविस्तमा गम्यवकयानिमरु वल्लायनः
तक वयायुकाः यतिश्चासावलाकिता तस्क कलावगसिंदगिन गक व्याप
म्यसंकारे साद न्यसोमनेसुत्वा मग्नसंसाससाग लावधोसंमालकोया १
होवागल्लषठमासयशासुन नयनसत्वाश्चन लो क्राहेमदामनेगलवमूर्क
इगत्राथसुष्ठोमानवर्लकिगड गवमधनावालीव कयाधियत्यधिनीय

छगह्यकवाकिन्दुमिगारुस्यवगायिता यमिधनवग्वत्यनाममागला
कमागवठमदाकवूजयाय गाऊगद्वधननाइता उदिमादियसंकासा
यर्हन्दवदनयशासरासयंति मांगाला सुदवाभुनमानवा न्नाकम्ययनि
गयालोका गामिसिद्धसद्धसा नीवायलेनादवि माहेमाहेलिति कम्
ऊगत्ववक्तनार्थय अरुमत्यादेताजिनाका नावगकुसंका नानारय

समाकला समवधायवनामानिसत्वाचक्षुम्यहंसदातात्रयिष्याम्यहंसत्वा
नानाशयमदानावाक्यामननमालगिमालाकमयन्तिमूर्तिर्यंगवाशकर्मो
लियुतारुत्वागुप्तसाधुधसायत्तागुरुलनिकनलिरुत्तुदम्बवनम् ३
ववित्तानामाशुकसतकंकुदियत्यनाकिर्तिनर्त्तनरदसरुमीश्वरेर्नाथेवी
धिसत्त्वमदाधिकेसर्वपापदलंयुधंमाहृत्यकीर्तिवर्धनधनधनकवंचेव

आलागायविश्वर्द्धीआयवावागऊननंसर्वसत्त्वसुखावदंयशोशीलप
कंवेवसर्वसत्त्वविकर्द्धनंमेगिमाहृत्यसर्वसत्त्वानांकीर्त्यमदानेनानुव
मकथंरुगवायदसनवलाकिर्तिशयवलोकीदिसहस्रवीर्त्तेशाखवधया
दृशशदक्षिनकवंचमदसायपद्यवर्द्धनमादिर्त्तनमवाचमदायाहृष्टसाधुश्म
हातयेरनामाशुभुमदाशाशसर्वसत्त्वैकवत्सलानिर्हाकलिनमनजाशा

सम्यक् स्वर्द्धनं च नासर्वं व्याप्तिं वनिमका समवेष्टयिषु घाम्बिता ॥ अम्ब
 लह एतिर्दग्ध ॥ ४ ॥ ताया निगुखावति ॥ नानादं संयव कामिदव संया
 सनाथम ॥ अन्तरोदत च मन्तदा एविश चैस निर्दगा ॥ ॥ ५ ॥ वाचने ४
 शुवाचनगायता वाहव मेधसत्वात् कं यो निसर्वसत्त्वलावधि स हसुगुर्ज
 सहसुनद ॥ ५ ॥ न माह गवत सुवला कय श मांमम सर्वसत्त्वाना ॥ ५ ॥

दुल्लाहा ॥ ५ ॥ तावदुताय पुन स्वाहा ॥ ५ ॥ सिद्धं स सिद्धं सुद्धं तिगुद्धं मुगगात्मा
 ऊमे निद्रयानि मा ल सा भं ग्धमनूयिमदाया हं यव लविह सिर् ॥ ५ ॥
 अयवादितामहा बोधि विव्वनूयीमदावला उ क ल्यानिमदा न जालाव
 धाणि महारासा सच व नी विभवा श्रीय ह्यायी वृद्धि व र्द्धनी धृ ति दायी वि
 दा स्वाहा ॥ ॥ ५ ॥ का वा का म नूयीनि स र्व सत्त्व हि गा य का सं ग मा हा

रही ऊया य ह्या यालमिनाद वि आर्थ नायामनाय माय इन्द्रो सविनीय
विद्यायाही ययं वदा वदान नामदागे वि अजि नाथी गवा स साय माहा मा
या सहा म्ब नागहा वलय लाक मर मदा बो दी मदा व ह्ये इष्ट सख नि स द नी ३।
पमाना मान न्याय विक्रया क लन पुहा वि श्रुता बो अ जीष भीर की वाय
य नाय ध्या रं म्नी क म्नी काली काल लायी नि मन्त्र बी व र्क नी मादनी

गुना कां नायी द वि आ वि दि शु शा वा मनि व द म नाय गु हा व गु रु वा सि नि
माग ल्या सां क लि मुं म्ना का त व द म ना ऊ वा र का यालिनी मदा व ग व द्या स
लया व ल कि ना सार्थ वा ह क पा इ रि न क सा ल म य द र्म नी र व ल दा सा स नी म
मो मो न्या मि त वि क मा र स व बी का मि धी मि चा व द्या बो अ मि ना धु वा म
ध न्या य न्या म हा रा म गु र ग म्नी य द र्म ना क ता न्क ना स नी ही मा उ म्ना उ

गयनाकुमाङ्गदकदिगायकासुवध्याहकिवत्सगात्रागोभ्ययोसिवाः
 शुक्लनित्यासर्वप्रमानगासर्वार्थसा नोहृदागामिधार्मीधनंददामभर
 याहोममीयूध्याजीमल्लोकोभ्यगात्मजागावानामशुभानगासर्वीसायवि
 यविधी॥ उंतावकयावलंवलनियसाह॥ ॥ नामाक्षरुवभक्तं कं
 लिह्यांदिखनवांचहस्यमद्रुनं शु कंदेवानामयिइलेहं सोहागहागक

यत्सर्वेकिलिखनासुनंसर्वेद्याधियममनंसर्वेभलशुखावर्हणिका
 तयर्थयथाधिमगुचिखानंसमादिगशासाइविनेवकाभेधनाक्षशिऊ
 मवाप्रयागाइशखिमसुखिनिह्येदविदधनवांरवेयकाइवेमदा
 याहामधोचनसंसयभवधनाम्वक्तव्येवावदालेकयाहवेत्ताऊ
 वामिगनायांमिहिंकिनभ्यापिडांशनिभसंभामसंकनइर्जनानाहय

समस्ति गंगसुवननादेवनामानि सुवैरुपानि धासुनि रना कालमस्य सुग
वमियु प्रागिवियुत्तं सुयमान्वासरु लंज न्य न सैकस्यम होत्मन शाय द
त्विदं याग न स्वयमानवो कि हे यि यमि सदि धि कालमायुश्चानुश्रियावः
लहर्ग न लशदवाना गाग थजु ज्ञा गन्ध वीक न पू न ना शा वि सा वा वा न
सीरु वा मा ग श नो ड न ड म द कि न्नी ना ल का य ना ल्हा दा मा न्दा म हा ग

हा द्वायाय समव काश्चैव स न का र वा दे का दय श व ता दा वि व या य था ऊ वा व्या
इह व न सा द्वाया अयिन न य न किं य नं सु स्य वि वा द दृष्ट म स्त्वा ना वा धी न
वा ध या ना क मि य मि स वे भ यो गु हं यु का य न यो ना अ व ध ना क मि स
या र्हा वा दे मां क वि नं यि य द र्से नं यो मि मां म हा वा मि न र्हे सा अ वि भा ल हा
क ल्प न मि ग र्से स वि न वा धि ह वा वि रु धि ता स दा वि ल सि ता व ड्ढे रु य

[illegible][illegible]

धम्मरत्न वज्रपाणि सुरत श्री महाविहार DH 150

कवसंकविन्वयगुणमनिविखग्वरनिमृणमनिमालविशुद्धयनिध
कलालिति जयशयनारुयश्वज्ज्वाल्लहिकाभग्धाविखड्गवरी
नमामि अज्जुहंरुहं अज्जुहंरुहं ११ हंरुहं अज्जुहंरुहं
रुहं अज्जुहंरुहं अज्जुहंरुहं साहा ॥ ॐ ॥ अज्जुहंरुहं विद्या
वतिनामहृदयधामनिमृणमनिमालविशुद्धयनिध ॥ ॐ ॥